Quest – बाबर के भारत विजयों का वर्णन करें। इसके क्या कारण थे एवं क्या परिणाम निकले?
Give a brief account of the Conquests of Babar in India. What were its Causes and results?

Or

यह कथन सत्य है कि "पानीपत की पहली लड़ाई एवं खनवाह का युद्ध भारत के इतिहास में निर्णायक थे।" अपने विचारों को तर्क सहित पुष्ट कीजिए तथा उसके परिणामों पर प्रकाश डालिये।
It is correct to describe the "first battle of Panipat and the battle of Khanwah as decisive battles of Indian History"? Give your reasons for the view you adopt and estimate the results of these battles.

Ans – बाबर जैसा कि इसके शब्दार्थ से ही ज्ञात होता है शेर की भाँति वीर एवं साहसी। वह एक महान सेनापति था। उसने अपनी शक्ति एवं योग्यता से ही काबुल का राज्य जीता था। उसकी इच्छा एक महान साम्राज्य निर्माण करने की थी। अतः उसकी नजर भारत की ओर भी गई।

भारत पर आक्रमण करने के कारण — बाबर के भारत पर आक्रमण के कई कारण थे। मुख्य रूप से भारत पर उसने 5 कारणों से आक्रमण किया —

1. मध्य एशिया में बड़ी गड़बड़ी हो रही थी। वहाँ उसके साम्राज्य विस्तार की विशेष आशा न थी। अतः उसने उस ओर बढ़ने का विचार त्याग दिया था।
2. बाबर ने काबुल में रहते हुए भारत की धन सम्पत्ति

Scanned with CamScanner

के बारे में बड़ा सुना था। एक बार उसके एक अमीर ने कहा था कि जहाँपनाह! आगे बढ़िये और संसार के ~~सर्वश्रेष्ठ~~ सर्वश्रेष्ठ देश पर अधिकार कर लीजिए। सिन्धु के उस पार एक साम्राज्य की स्थापना कीजिये जिसके लिए आपके पूर्वज मार्ग दिखला गये हैं। लाहौर और हिन्दुस्तान के मध्य में अपना दरबार लगाइये और तातारी की बर्फ और तुषार को छोड़कर हिन्दुस्तान के ~~सुखों~~ बागों का आनन्द लीजिये। हर चीज आपको दक्षिण (भारत) की ओर आमंत्रित कर रही है।

3. वह भारत पर अपने पूर्वजों का अधिकार समझता था। इस लिए उसने समरकन्द पर भी आक्रमण किये थे परन्तु वहां उसे असफलता मिली थी। अतः वह भारत को जीतना चाहता था। पंजाब पर वह अपना वैधानिक अधिकार समझता था।

4. बाबर की महत्वकांक्षा भी उसके आक्रमण का कारण थी। वह केवल काबुल या उसके आसपास के प्रदेश को ही लेकर सन्तुष्ट नहीं था।

5. भारत की राजनीतिक अव्यवस्था ने भी उसे आक्रमण के लिए प्रेरित किया। उस समय भारत छोटे-छोटे राज्यों में बंटा था। इसके साथ ही साथ उसे भारत पर आक्रमण करने के लिए भी निमन्त्रण मिल रहे थे। इन सभी कारणों से उसने भारत पर आक्रमण करने की तैयारी में लग गया।

भारत पर प्रारम्भिक आक्रमण — बाबर ने शुरू-शुरू में काबुल से भारत पर छोटे-छोटे आक्रमण किये और कुछ समय बाद वह काबुल जीत गया। ऐसा उसने पाँच आक्रमण किए जो इस प्रकार हैं —

1. 1519 ई० में बाबर ने भारत पर पहला आक्रमण किया।

बाबर ने उत्तर-पश्चिम सीमा के एक किले बाजौर पर आक्रमण किया और दो-तीन घंटे की लड़ाई के बाद ही उस पर कब्जा कर लिया और भेरा के किले को भी उसने जीत लिया। तत्पश्चात वह वापस काबुल लौट गया जिससे सभी दुर्ग पुनः स्वतन्त्र हो गये।

2. 1519 के अन्त में ही वह खैबर के रास्ते पुनः भारत आया। इस बार उसका उद्देश्य यूसुफजइयों का दमन एवं पेशावर के किले में रसद सामग्री पहुँचाना था। पर मध्य एशिया में गड़बड़ी होने के कारण उसे वापस लौटना पड़ा।

3. 1520 ई॰ में उसने तीसरी बार भारत पर आक्रमण किया। बाजौर और भेरा जीत कर वह स्यालकोट तक आगे बढ़ा। उसने सैयदपुर को जीता, जिसका वर्णन गुरु नानक ने भी किया है लेकिन कन्धार के शासक शाह बेग अर्गुन से युद्ध करने के लिए बाबर को फिर से काबुल वापस लौटना पड़ा।

4. 1524 ई॰ में उसने भारत पर चौथी बार आक्रमण किया। इस बार दौलत खाँ लोदी ने उसे भारत पर आक्रमण का न्योता दिया था। बाबर ने लाहौर, दिपालपुर और जालन्धर के प्रदेश जीत लिए। दौलत खाँ को बाबर के प्रति कुछ आशंका हुई उसने बाबर के विरुद्ध एक षड्यन्त्र भी रचा, पर उसे सफलता नहीं मिली। बाबर अपनी कुछ सेना पंजाब में छोड़कर पुनः वापस काबुल चला गया।

5. 1525 ई॰ में बाबर ने एक विशाल सेना के साथ भारत पर आक्रमण किया। उसके साथ लाहौर की सेना भी मिल गई। बाबर ने सम्पूर्ण पंजाब प्रदेश को जीतकर अपने अधीन कर लिया तब वह दिल्ली की ओर बढ़ा।

बाबर के उपरान्त पांच आक्रमणों के पश्चात उसकी प्रमुख लड़ाइयां प्रारम्भ होती है जो उसने 1526-29 तक लड़ी थी।

पानीपत का प्रथम युद्ध — बाबर की भारत विजय में यह पहली प्रमुख विजय थी। 12 अप्रैल 1526 को दोनों पक्षों की सेनायें लड़ाई के मैदान में आ डटी। युद्ध के प्राय: वही कारण थे जो उसके आक्रमण के थे। दोनों ओर से युद्ध की पूरी तैयारी हुई। बाबर की सेना में 12000 घोड़ सवार थे, और उसके पास एक अच्छा तोपखाना भी था जबकि इब्राहीम लोदी की सेना लगभग 1 लाख की थी उसके पास बड़ी संख्या में हाथी थे। बाबर ने अपनी सेना को तुलगुमा रण नीति की शिक्षा दी थी जबकि इब्राहीम लोदी की सेना एक भेड़ियों का झुंड के समान थी जिसमें कोई कानून और अनुशासन नहीं था।

बाबर ने स्वयं इब्राहीम लोदी के बारे में लिखा है "इब्राहीम लोदी एक अनुभवहीन व्यक्ति था वह युद्ध क्षेत्र में बिना किसी योजना के आगे बढ़ने वाला, पीछे हट जाने वाला और रुक जाने वाला। वह बड़ी अदूरदर्शिता के साथ युद्ध का संचालन करता था"।

21 अप्रैल को प्रात: से युद्ध शुरू हुआ। बाबर की सेना के दोनों ओर तुलगुमा सेना (Turning file) थी जिसमें वह दायें ओर बायें ओर चलकर शत्रु सेना को पीछे से घेर लेती थी। सामने तोपखाना था। अत: लड़ाई शुरू होते ही इब्राहीम की सेना चारों ओर से घिर गई। एक ही दिन में युद्ध का निर्णय हो गया और बाबर की विजय हुई।

इब्राहीम लोदी युद्ध क्षेत्र में ही मारा गया जिस स्थान पर वह मरा उसके निकट 6000 सैनिकों के शव मिले गये। विभिन्न भागों में 1500-1600 लोग मारे गये थे। बाबर ने आगे बढते हुए दिल्ली व आगरा पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार से अफगान शासकों के राज्य का अन्त हो गया।

लेनपूल के शब्दों में "दिल्ली के अफगानों के लिए पानीपत का युद्ध विनाशकारी सिद्ध हुआ और उसका राज्य एवं शक्ति नष्ट हो गई।

रशब्रुक विलियम ने कहा है "पानीपत की विजय ने बाबर के दावे को वैधानिकता का जामा पहना दिया और उसकी भविष्य की योजनाएं तथा प्रयत्न उसी दावे को कार्य रूप में परिणत करने के प्रयास मात्र थे।

परिणाम — 1. इस युद्ध में इब्राहीम लोदी की पराजय हुई और वह युद्ध क्षेत्र में ही मारा गया इस तरह दिल्ली में अफगानों का राज्य समाप्त हो गया एवं मुगलों के राज्य की नींव पड़ी।

डॉ॰ ईश्वरी प्रसाद के अनुसार "पानीपत के युद्ध ने दिल्ली का साम्राज्य बाबर के हाथों में डाल दिया। लोदी वंश की शक्ति बिखर गई और हिन्दुस्तान की सम्प्रभुता चुगताई तर्कों के हाथों में चली गई।

2. इब्राहीम लोदी के क्रूर शासन के स्थान पर मुगलों का उदार एवं सुन्दर शासन प्रारम्भ हुआ।

3. बहुत से लोगों का विचार था कि बाबर भी महमूद गजनवी या मोहम्मद गौरी की तरह भारत को लूट-पाट कर वापस चला जाएगा। उनकी इन आशाओं पर पानी फिर गया।

Scanned with CamScanner

4. बाबर के साथ फारस की सभ्यता भारत में आई और अपना प्रभाव भारत में छोड़ गई।
5. पानीपत के युद्ध में तोपखाना व तुलगमा प्रणाली निर्णायक सिद्ध हुए थी। अतः युद्ध करने के पुराने ढंग बदल गये।
6. भारत एवं मुगलों के समन्वय से एक नई कला का विकास हुआ जिसे कुछ इतिहासकार हिन्दू-मुस्लिम कला कहते हैं।

क्या यह युद्ध निर्णायक युद्ध था — बाबर ने दिल्ली व पंजाब पर अधिकार कर लिया था। परन्तु केवल इतनी जीत से वह भारत का सम्राट न बन सका। वास्तव में पानीपत की विजय से भारत में उसके कार्य आरम्भ हुए थे। इस लिए एक इतिहासकार ने कहा है कि "The defect of Ibrahim army (at Panipat) was but the beginning of Babar's task". वास्तव में यह बाबर के लिए आगे के संघर्षों का आधार बन गया।

अफगान लोगों की शक्ति का भी पूर्ण दमन इस युद्ध से नहीं हुआ। इस हार से वे चौकन्ने हो गये और उन्होंने नये उत्साह से मुगलों के विरुद्ध संगठन बनाना प्रारम्भ कर दिया। वास्तव में यह युद्ध केवल अफगानों पर एक सशक्त प्रहार था। उनकी शक्ति अभी पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुई थी।

लेनपूल के अनुसार "The Afghan snake was scotched, but not killed".

अतः यह कहा जा सकता है कि "यह युद्ध इस रूप में निर्णायक रहा कि बाबर ने भारत में ही रह कर अपने शत्रुओं को पराजित करने का विचार किया। वास्तव में उसका कार्य तो इस युद्ध के बाद ही शुरू हुआ।

Scanned with CamScanner

इब्राहीम लोदी के हार के कारण :- इब्राहीम की सेना में सैनिक अनुशासन न था। उसके पास इतनी विशाल सेना होते हुए भी वह बाबर की छोटी सी सेना से हार गया था। इसका कारण यह था कि बाबर की सेना पूरी तरह से अनुशासित थी और हर एक मौके के लिए तैयार थी।

2. इब्राहीम के अमीर भी उससे असन्तुष्ट थे। उसने अपने कठोर स्वभाव के कारण सरदारों, अमीरों व जनता को नाराज कर दिया था। अतः वे ही लोग उसकी जड़ें काटने पर तुले हुए थे।
3. इब्राहीम के सेनापति व अमीर विलासिता पूर्ण जीवन गुजारने के कारण अयोग्य हो चुके थे। जबकि बाबर के सैनिक व अमीर युद्धों के कार्य में निपुण थे।
4. इब्राहीम स्वयं एक अयोग्य सेनापति था परन्तु बाबर एक महान सेनापति था।
5. बाबर का तोपखाना व तुलगुमा रणनीति युद्ध के निर्णय में सहायक हुई।
6. इब्राहीम के हाथियों की विशाल पंक्ति भी उसकी हार का कारण बनी जिसने अपनी ही सेना को रौंद डाला।
7. अन्य भारतीय राजाओं ने भी इब्राहीम लोदी को सहयोग न दिया। इस कारण भी उसकी हार हुई।
8. भारत की उस समय की विघटित राजनीतिक दशा ने बाबर की विजय में साथ दिया।

पानीपत की विजय के बाद बाबर ने हुमायूं को आगरा भेज दिया। एक दूसरे दल ने दिल्ली जीतकर किले व कोष पर अधिकार कर लिया। 27 फरवरी को उसके नाम का खुतबा पढ़ा गया।

Scanned with CamScanner

10 मई को वह आगरा पहुँचा और इब्राहिम लोदी के महल में ठहरा। यहीं हुमायूँ को अन्य धन राशि के साथ "कोहिनूर" भी उसे भेंट किया। वह हीरा बाबर ने हुमायूँ को ही दे दिया। अमीरों को पदवी दिये गये। काबुल में प्रत्येक व्यक्ति को एक-एक चाँदी का सिक्का दिया गया।

खनवाह का युद्ध — बाबर के भारत युद्धों में खनवाह का युद्ध सबसे प्रसिद्ध है। यह लड़ाई राजपूतों के सबसे प्रसिद्ध और वीर शासक राणा सांगा व बाबर के बीच लड़ी गई।

कारण — 1. मेवाड़ का शासक राणा सांगा राजपूतों का नेता था। बाबर जानता था कि उसकी शक्ति को समाप्त किये बिना दिल्ली पर शासन करना कठिन होगा।

2. दूसरे राणा सांगा का भी विचार था कि बाबर लूटमार करके वापस काबुल चला जायेगा। राणा सांगा भारत में हिन्दू साम्राज्य की स्थापना की योजना बना रहा था। परन्तु बाबर के भारत में जमने से उससे उसका युद्ध अनिवार्य हो गया।

3. राणा सांगा ने मेवाती व इब्राहिम लोदी के भाई महमूद लोदी को भी अपने यहाँ जगह दी। बाबर इन विद्रोहियों को अपने अधिकार में लेना चाहता था।

4. मोहम्मद शरीफ नामक एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की थी जिसमें मुगलों की भावी पराजय की बात की।

घटनायें — राणा सांगा ने सब राजपूत सरदारों को व अन्य राजाओं को एकत्रित किया उनके साथ इब्राहिम लोदी का भाई महमूद लोदी व अन्य पठानों को भी साथ लिया। दूसरी ओर बाबर ने भी इन से लड़ने के लिए अपनी पूरी तैयारी की।

लेनपूल के अनुसार, "अब बाबर को ऐसी उत्तम कोटि के योद्धाओं का सामना करना पड़ा जिनसे पहले कभी उसकी टक्कर नहीं हुई थी। राजपूत शक्तिशाली, वीर योद्धा तथा स्वदेश के गुरूर, सबल राष्ट्रीय भावना से अनुप्राणित थे"।

16 मार्च 1527 को सीकरी के निकट खानवाह नामक स्थान पर बाबर के सिपाहियों से राणा सांगा की टक्कर हुई। बाबर स्वयं केन्द्रीय भाग का संचालन कर रहा था। हुमायूँ ने दायें तथा मेंहदी ख्वाजा ने बायें भाग का संचालन किया। बाबर की सेना बुरी तरह से घबरा गई। इस युद्ध के बारे में एक इतिहासकार ने लिखा है कि "ऐसा कोई राजपूत कुल नहीं था, जिसके मात्र नायक का रक्त इस युद्ध में न बहा हो"।

इसी समय काबुल से एक ज्योतिषी आया उसने भविष्यवाणी की कि इस युद्ध में बाबर की हार होगी। इससे मुगल सेना में बड़ी निराशा हो गई। परन्तु बाबर ने अपना साहस नहीं खोया। उसने शराब पीना छोड़ दिया। बाबर के शब्दों में "मैंने सोने तथा चाँदी की सुराहियों, प्यालों तथा मदिरा त्यागने का संकल्प लिया"।

उसने अपनी भागती हुई सेना को इकट्ठा किया और उसके समक्ष एक प्रभावशाली भाषण दिया, जिसका कुछ अंश इस प्रकार है —

"अमीरों तथा सैनिकों! प्रत्येक व्यक्ति जो इस संसार में आता है नाशवान है।....... सम्मान पूर्वक मरना अपमानित होकर जीने से कितना अच्छा है। सर्व-श्रेष्ठ परमात्मा ने प्रसन्न होकर हमें

इस कार्य में नियोजित किया है। यदि हम मारे गये तो वीर गति प्राप्त होगी और यदि विजयी हुए तो ईश्वर के उद्देश्य की जीत होगी", सभी सिपाहियों पर इस भाषण का बड़ा प्रभाव हुआ। सिपाहियों ने कुरान पर हाथ रखकर प्रतिज्ञा की, कि वे अन्तिम समय तक लड़ेंगे। बाबर ने पुनः आक्रमण किया। राजपूतों ने बड़ी वीरता से सामना किया पर विजय बाबर की हुई।

परिणाम ⟶ यह युद्ध एक निर्णायक युद्ध था। इसके बाद भारत में मुगल राज्य स्थापित होना निश्चित हो गया।

रशब्रुक विलियम के अनुसार — खानवाह का युद्ध भारतीय इतिहास के निर्णायक युद्धों में से एक था। The battle of Khanwah is one of the most decisive battle in the history of India.

1. इस युद्ध के बाद राजपूतों की प्रभुता समाप्त हो गई और काफी समय तक राजपूतों की शक्ति खड़ी न हो सकी।
2. राणा सांगा की हार से बाबर भारत का पूर्ण रूप से शासक बन गया और मुगल शासन की नींव मजबूत हो गयी।
3. बाबर का ध्यान अब काबुल से हट कर भारत की ओर हो गया।
4. बाबर के डर-डर ठोकरें खाने के दिन समाप्त हो गये।
5. खानवाह की विजय के बाद बाबर ने अन्य छोटे स्थानों पर विजय प्राप्त की। हुमायूं को सम्भल, जौनपुर, गाजीपुर व कालपी जीतने के लिए भेजा। मेंहदी ख्वाजा ने इटावा पर अधिकार कर लिया। हसन खाँ मेवाती खानवाह के युद्ध में ही मारा गया।

इस प्रकार से पानीपत व खानवाह की

लड़ाइयों के द्वारा बाबर भारत का भाग्य निर्माता बन गया था। उसकी इन दोनों लड़ाइयों को निर्णायक युद्ध कहा जा सकता है। इस समय भारत में दो ही बड़ी शक्तियां थी, अफगान व राजपूत। इन दोनों युद्धों से दोनों शक्तियों का दमन हुआ। बाबर ने इन दोनों निर्णायक युद्धों के अलावा दो युद्ध और किये।

चन्देरी का युद्ध — उसने 9 दिसम्बर 1527 को चन्देरी के किले पर आक्रमण किया। यहाँ का शासक मेदिनीराय था। वह राणा सांगा द्वारा नियुक्त था और 400 सैनिकों द्वारा किले की रक्षा कर रहा था। आखिर उसके सैनिकों ने भी केसरिया वस्त्र पहनकर युद्ध किया। इसमें भी विजय बाबर की हुई। बाबर ने लिखा है- "चन्देरी के उत्तर पश्चिम में स्थित एक पहाड़ी की चोटी पर मैंने काफिरों के सिरों का एक मीनार बनाया।

घाघरा का युद्ध — अफगानों की शक्ति पूर्व में बढ़ रही थी। महमूद लोदी ने बिहार पर कब्जा कर लिया था। उसने बंगाल के शासक नुसरतशाह के यहाँ शरण ली थी। बाबर ने नुसरतशाह से महमूद लोदी को सौंप देने को कहा पर वह नहीं माना। अतः दोनों में युद्ध हुआ। यह युद्ध 6 मई 1529 को घाघरा (बक्सर) के मैदान में हुआ। बाद में दोनों के बीच सन्धि हो गई।

बाबर की विजय के कारण — बाबर भारत में चार वर्ष रहा और उसको क्रमशः चार युद्ध पानीपत की प्रथम लड़ाई, खनवाह का युद्ध, चन्देरी के किले पर आक्रमण व घाघरा की लड़ाई, करने पड़े। इन चारों युद्धों में बाबर को सफलता प्राप्त हुई। इन युद्धों में बाबर के विजय के कुछ प्रमुख कारण निम्न थे —

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

1. इब्राहीम लोदी, जो दिल्ली का सुल्तान था, स्वयं न योग्य सेनापति था और न ही उसकी सेना युद्धकला में निपुण थी।
2. इसके विपरीत बाबर की सेना बड़ी कुशल थी। उसके सैनिक ज्यादा उत्साही व लड़ाकू थे।
3. बाबर एक महान सेनापति था। मध्य एशिया के अनेक युद्धों का प्रत्यक्ष अनुभव उसे प्राप्त था। उसकी सैनिक क्षमता असाधारण थी जबकि इब्राहीम लोदी सेनापति की दृष्टि से अयोग्य था।
4. भारत छोटी-छोटी रियासतों में बटा हुआ था। देश में राष्ट्रीय एकता के अभाव में बाबर को विजय प्राप्त करने में बड़ी सुविधा रही।
5. बाबर के सैनिकों में धार्मिक जेहाद की भावना भी थी। वे भारत के युद्ध में भाग लेना पुण्य समझते थे।
6. बाबर का तोपखाना भी निर्णायक रहा। पानीपत की लड़ाई में इसने बहुत काम किया।
7. बाबर का खनवाह की लड़ाई में भाषण भी उसके विजय में बड़ा सहायक सिद्ध हुआ। यदि बाबर इतना प्रभावशाली भाषण न देता तो मुगलों की सेना का काम कठिन हो जाता।
8. तुलगमा रणनीति भी बाबर की विजय में बड़ी सहायक सिद्ध हुई।
9. बाबर का व्यक्तित्व असाधारण था। वह एक मामूली सैनिक से लेकर सेनापति तक को प्रभावित करता था। उसमें दूरदर्शिता तथा समय के अनुसार काम करने के अनेक गुण थे।

बाबर की मृत्यु — बाबर की मृत्यु 26 दिसम्बर 1530 ई० को हुई। उसकी मृत्यु के बारे में कई मत हैं।

Scanned with CamScanner

कुछ कहते हैं कि कामरान ने उसे जहर दे दिया था क्योंकि बाबर हुमायूं को ही अधिक प्यार करता था। परन्तु यह मत ठीक नहीं मालूम देता।

दूसरे मत के अनुसार एक बार उसका पुत्र हुमायु बहुत बिमार हो गया था। उसके बचने की आशा बहुत कम थी। बाबर ने अपना शरीर को उसकी बीमारी के लिए भगवान से लेने की दुआयें मांगी, जिससे हुमायु धीरे-धीरे ठीक होने लगा और बाबर बीमार होता गया। अन्त में 26 दिसम्बर 1530ई० को उसकी मृत्यु हो गई।

Page No.:
Date :

Ques- "बाबर एक महान विजेता था परन्तु राज्य निर्माता नहीं" इस को स्पष्ट करें। ("Babar was a great Conquerer but no empire builder." Explain and discuss.

Ans- उपरोक्त प्रश्न के दो पहलू है, इसका प्रथम पहलू यह है कि बाबर एक महान विजेता था तथा दूसरा पहलू यह है कि वह कोई योग्य साम्राज्य निर्माता या शासक न था। इन दोनों कथनों को समझने के लिए बाबर के जीवन और कार्यों को देखना आवश्यक होगा।

बाबर एक विजेता के रूप में — बाबर 12 वर्ष की अल्प आयु में फरगाना का शासक बना था। उस समय वह चारों ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ था। उसने गद्दी पर बैठते ही अपनी वीरता एवं साहस का परिचय दिया। उसने कई विजयें प्राप्त की थी, परन्तु कई बार उसे हार भी खानी पड़ी थी। समरकन्द को उसने कई बार जीतने का प्रयत्न किया था। 1504 ई० में उसने काबुल पर अधिकार किया था। उसने बदख्शां, बुखारा, कन्धार, इत्यादि प्रदेशों को भी जीत लिया था।

उसका भारत पर आक्रमण भी उसकी वीरता एवं साहस का परिचायक है। भारत की अशान्ति एवं कुव्यवस्था का लाभ उठा कर उसने भारत पर भी आक्रमण किया। उसने 1519-1525 तक लगातार कई आक्रमण किए। उसने भारत के सीमांत प्रदेशों को अपने अधिकार में किया।

पानीपत का प्रथम युद्ध उसके महान विजेता होने का स्पष्ट प्रमाण है। पानीपत के युद्ध का संचालन उसने बड़ी योग्यता से किया। उसने अपनी सेना को बहुत अच्छे ढंग से सजाया। उसने लड़ाई में

Scanned with CamScanner

कौन सा स्थान उपयुक्त होगा इस ओर विशेष ध्यान दिया। पानीपत के मैदान में जिस ढंग से उसने अपनी सेना खड़ी की वह भी उसके रण-कौशल एवं उसकी चतुराई को प्रकट करता है। छोटी सी सेना होते हुए भी उसने अपने से पाँच गुणा बड़ी सेना वाले इब्राहिम लोदी की सेना को पराजित किया।

खानवाद की लड़ाई उसकी वीरता का सबसे बड़ा उदाहरण है। इस बार उसकी टक्कर भारत के सबसे शक्तिशाली सम्राट राणा सांगा से हुई जिसके पास एक विशाल सेना थी और जिसके अधीन लगभग सम्पूर्ण राजस्थान था। राणा सांगा जीवन भर लड़ता रहा था। उसे अनेक युद्ध का अनुभव प्राप्त था। बाबर ने बड़े योग्य ढंग से सेना का संचालन किया परन्तु आरम्भ में उसकी सेना हारने लगी। पर प्रारम्भिक हार से वह घबराने वाला नहीं था। चारों ओर विपरीत परिस्थितियाँ के होने पर भी उसने सैनिकों में जोश की भावना भरी। बाबर यह जानता था कि सैनिकों में कैसे जोश भरा जा सकता है। शराब के प्याले को तोड़ कर उसने सैनिकों के सम्मुख एक व्यक्तिगत उदाहरण रखा। उसने सेना के नैतिक स्तर को ऊँचा किया और पुनः राणा सांगा पर आक्रमण किया। राणा सांगा की शक्ति को उसने कुचल दिया जिसके कारण राजपूतों को काफी समय तक सिर न उठा सके।

उसने चन्देरी के किले के रक्षक मेदिनी राय पर भी आक्रमण किया। वह जानता था कि मेदिनी राय कभी भी हिन्दुओं का समर्थन पाकर मुगलराज्य के लिए खतरा पैदा कर सकता है। बाबर ने 1528 ई० में उसपर आक्रमण किया जिसमें मेदिनीराय की भी हार हुई।

बाबर ने अफगानों की शक्ति को पूरी तरह कुचलने का निश्चय किया। उसने बंगाल के नुसरतशाह के विरुद्ध भी अभियान चलाया। घाघरा की लड़ाई में उसने नुसरतशाह को सन्धि करने के लिए मजबूर किया।

इस प्रकार से इतने थोड़े समय में इतने बड़े शत्रु को विजित करना उसकी युद्ध कुशलता का ही प्रमाण है। वह चार साल भारत में रहा और उसने चार बड़ी विजयें प्राप्त की। वह केवल एक महान सेनापति ही नहीं था बल्कि एक अच्छा सैनिक भी था। उसमें व्यक्तिगत साहस भी अपार मात्रा में था।

रशब्रुक विलियम के अनुसार "वह एक प्रशंसनीय घुड़सवार, कमाल का निशाना लगाने वाला, बढ़िया तलवार चलाने वाले कुशल शिकारी शामिल थे।" वह सैनिकों के कष्ट को समझता था। उसमें सैनिकों को परखने की पूरी क्षमता थी। सैनिकों के साथ उसका बड़ा अच्छा व्यवहार था।

डा० आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव ने उसके चरित्र का मूल्यांकन करते हुए लिखा है — "Babar may be called a Soldier and Scholar. He was a Soldier first and the Scholar only next. बाबर ने अपने सिपाहियों और सरदारों को जीत लिया था। उसके सैनिक व सरदार भी उसपर अपने प्राण तक न्यौछावर करने के लिए तैयार रहते थे। वह कभी हार से घबराता या उदासीन नहीं होता था। उसने बाबरनामा में लिखा है — "जब मैं हारता हूँ तो मैं बैठ नहीं जाता न हो मायूस होता और न ही इधर-उधर झांकता हूँ।

बाबर साम्राज्य निर्माता के रूप में — आज हम प्रश्न के दूसरे पहलू पर विचार करें क्या बाबर एक साम्राज्य निर्माता नहीं था।

गया। ठीक ही है कि, दिल्ली आगरा के विजेता बाबर ने भारत के मुगल साम्राज्य की नींव रखी। उसके उत्तराधिकारी व पुत्र हुमायूँ के काल में वह उखाड़ कर फेंक दी गई। हुमायूँ को बाबर का स्थापित सिंहासन छोड़कर भागना पड़ा और पन्द्रह वर्ष बाद फिर से नवीन राज्य प्रारम्भ करना पड़ा। इस प्रकार जो भारत बाबर ने दिया, वह समाप्त हो गया। इस से सिद्ध होता है कि बाबर एक विजेता था परन्तु एक राज्य संस्थापक न था। उसमें साम्राज्य संस्थापक के गुण न थे। वह राज्य संगठन की ओर ध्यान न दे सका। एक अच्छा योद्धा होने के कारण जब तक वह जीवित रहा कोई शत्रु उसके सामने टिक न सका। रश्बुक विलियम ने ठीक ही कहा है- "बाबर ने अपने पुत्र के लिए ऐसा साम्राज्य छोड़ा था जो केवल युद्ध की परिस्थितियों में ही चल सकता था, शांति के समय में वह निर्बल था"।

उसने शासन प्रबन्ध की ओर ध्यान न दिया। बाबर ने खुद बाबरनामा में लिखा है "मेरे पास इतना समय नहीं था कि मैं विभिन्न परगनों तथा टोलियों पर अधिकार करने और उनकी रक्षा करने के लिए उपयुक्त व्यक्तियों को भेज सकता"। राज्य का पुराना ढांचा चलता रहा। घूस का बाजार गर्म था। जनता पर अत्याचार होते रहे। उसने सारे राज्यों को जागीरों में बाँटा। भारत से लाया हुआ बहुत सारा धन इनामों में बाँट दिया। उसने हिन्दुओं को काफिर कहा। हिन्दुओं को ऊँचे स्थान नहीं मिला था। अपराधों पर कठोर सजा दी जाती थी। उसके काल में सारी वित्त व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई।

डा० आशीर्वादी लाल ने लिखा है- "Babar was a poor financier."

Scanned with CamScanner

अतः उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि वह कोई साम्राज्य निर्माता न था और न ही वह कोई योग्य प्रशासक था।

इस प्रकार बाबर को एक साम्राज्य निर्माता नहीं कहा जा सकता था। वह शेरशाह या अकबर की तरह महान शासक न था। उपरोक्त कथन सत्य ही है कि "Babar was a great Conquerer but no empire builder".